

- ◆ यह एक पुरातात्विक स्थल है। जहां से अनेक भवन मंदिर व हिंदू देवी देवताओं की मूर्तियां एवं अभिलेख प्राप्त हुए।
- ◆ यहां का शिवमंदिर प्रसिद्ध है।
- ◆ यहां से प्राप्त मूर्तियों में महिषासुर मर्दिनी की मूर्ति महत्वपूर्ण है।

नोट:-

- ◆ बिलाई माता मंदिर धमतरी में स्थित है।
- ◆ मदकू द्वीप स्थल शिवनाथ नदी के तट पर स्थित हैं।
- ◆ एशिया का दूसरा बड़ा चर्च कुनकुरी में स्थित है।
- ◆ ग्राम नगपुरा में स्थित जैन मंदिर पार्श्वनाथ तीर्थंकर को समर्पित है।

[CG PSC (HORTI)-2015]

[CG PSC (PRE)-2015]

[CG PSC (ENGG G-2)-2015]

[CG PSC (MI)-2015]

28

छ. ग. में साहित्य एवं साहित्यकार

- छत्तीसगढ़ के पाणिनी - [CG PSC (ABEO)2013]
- छ.ग. के प्रथम नाट्यकार - हीरालाल काव्योपाध्याय
- छ.ग. के छायावाद के प्रवर्तक - लोचन प्रसाद पाण्डेय - कलिकाल, भूतहामंडल
- छ.ग. के प्रथम कहानीकार - मुकुटधर पाण्डे - कुर्सी के प्रति [CG Vyapam (AMIN)2017], [CG PSC (ABEO)2013]
- - यंशीधर पाण्डे - हीरु के कहिनी [CG PSC (ABEO)2013]
- - सीताराम मिश्र - सुरही गइया [CG PSC (MAINS)2013]
- - निरुपमा शर्मा (सोनाबाई) - पतरेंगी
- छ.ग. की प्रथम महिला हिन्दी साहित्यकार - निरुपमा शर्मा - बूंदों की सागर
- छ.ग. के प्रथम निबंधकार - केयूर भूषण - राणी ब्रम्हण की दुर्दशा (उपन्यास - फूटहाकरम) [CG PSC (MAINS)2012]
- छ.ग. के प्रथम उपन्यासकार - शिवशंकर शुक्ल - 1. दियना के अंजोर 2. मोगरी [CG PSC (PRE.)2013]
- छ.ग. के प्रथम खण्डकाव्यकार - पं. सुन्दरलाल शर्मा - दानलीला
- छ.ग. के प्रथम महाकाव्यकार - प्रणयन जी - 1. श्रीराम कथा 2. श्री कृष्ण कथा 3. श्रीमहाभारत कथा
- छ.ग. में व्यंग लेखन प्रारंभ - शरद कोठारी
- छ.ग. के वात्नीकि - गोपाल प्रसाद मिश्र [CG PSC (Pre) 2012]

- "छत्तीसगढ़ी बोली व्याकरण और कोष" के लेखक - डॉ. क्रांति कुमार
- "छत्तीसगढ़ी बोली का शास्त्रीय अध्ययन" के लेखक - शंकर शेष
- "छत्तीसगढ़ी-हिन्दी शब्द कोष" के लेखक - डॉ. पालेश्वर एवं राजभाषा आयोग
- "छत्तीसगढ़ी भाषा का उद्विकास" - डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा
- मालचंद्राशव तैलंग - छत्तीसगढ़ी, हलवी एवं भतरी भाषाओं का वैज्ञानिक अध्ययन

राजानांदगांव



दिग्विजय कॉलेज



त्रिवेणी परिसर



गंजानंद माधव मुक्तिबोध (प्रयोगवाद के जनक, छ.ग. नीलकंठ) [CG PSC (Pre) 2005] शेखर एक जीवनी (प्रथम प्रयोगवाद रचना) अंधेर में ब्रम्ह राक्षस चांद का मुंह टेढ़ा है। कामायनी एक पुनर्विचार भुरी - 2 खाक धुल साहित्य एक डायरी	पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी (राजानांदगांव) [CG PSC (ADHIS) 2014] क्या लिखूं झलमला कारी सरस्वती पत्रिका	बलदेव प्रसाद मिश्र साकेतसंघ छत्तीसगढ़ परिचय तुलसी दर्शन [CG vyapam(RTO)] [CG vyapam(RTO)] [CG vyapam(RTO)]
--	---	--

<p>❖ विनोद कुमार शुक्ल (प्रथम सुंदरलाल शर्मा पुरस्कार प्राप्तकर्ता - 2000) [CG PSC (Pre) 2013]</p>	<p>• वह आदमी घला गया [CG PSC (Engg. set) 2014-15] • नौकर की कमीज • दीवार में एक खिड़की रहती थी • लगभग • जयहिन्द • खिलेगा तो देखेंगे</p>
<p>❖ श्यामलाल चतुर्वेदी</p>	<p>• बेटी के विदा • पराभर लाई [CG PSC (mains M.) 2012], [CG PSC (pre) 2010], [CG PSC (AP) 2009] • भोलवा भोलाराम बनिस [CG PSC (mains) 2012] (नोट : छ.ग. के प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष थे)</p>
<p>❖ दानेश्वर शर्मा</p>	<p>• बेटी के विदा [CG PSC (pre) 2010] • लवकुश • हर मौसम में छंद लिखूंगा</p>
<p>❖ विनय कुमार पाठक रचना</p>	<p>• छ.ग. के प्रथम समीक्षात्मक रचनाकार 1. छत्तीसगढ़ी साहित्य अरु साहित्यकार [CG PSC (mains) 2012] 2. धान का कटोरा (पत्रिका) 3. एक रूख एकेच शाखा (निबंध) 4. छत्तीसगढ़ी लोककला (कहानी)</p>
<p>❖ शकुन्तला वर्मा</p>	<p>• "छत्तीसगढ़ी लोक जीवन और लोक साहित्य" का अध्ययन</p>
<p>❖ दयाशंकर शुक्ल</p>	<p>• "छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य" का अध्ययन</p>
<p>❖ कपिलनाथ मिश्र</p>	<p>• खुसरा चिरई के विहाव [CG PSC (mains) 2015]</p>
<p>❖ राजेन्द्र सोनी</p>	<p>• खोरबहरा तोला गांधी बनावो • दुब्बर ला दु असाढ़</p>
<p>❖ पालेश्वर शर्मा</p>	<p>• सुसक इन कुरी सुरता ले (कहानी) • तिरिया जनम इन दे • गोरसी के गोठ • सूरज साथी है • छत्तीसगढ़ परिदर्शन • सासों का दस्तक (उपन्यास)</p>

○ राजेन्द्र तिवारी	• भूईया के पाकिस चून्दी
○ प्यारेलाल गुप्त	• गांव में फुल घलो गोठियाथे
	• धान लुआई
	• लवंग लता
	• प्राचीन छ.ग. [CG PSC (EAP) 2016]
○ निरंजन लाल गुप्त	• किसान के करलई
○ लखनलाल गुप्त	• संझीती के बेरा
	• बेटी की मनसूबा और वर की खोज
	• सरग ले डोला आईस
	• हाथी घोड़ा पालकी
	• चंदा अमृत बरसाईस
	• सोनपाल (11 निबंधों का संग्रह) [CG PSC (MI) 2010]
	• सुरता के सोन किरण
	• सुआ हमर संगवारी
○ विमल पाठक	• गँवई के गीत
○ रामदयल तिवारी (छ.ग. के विद्यासागर)	• गांधी मिमांसा [CG PSC (ADH) 2014]
○ नंद किशोर तिवारी	• परेमा (एकांकी) [CG PSC (mains) 2012 M.]
○ कपिलनाथ कश्यप	• अंधियारी रात
	• गुरीवट विवाह
	• डहर के फूल
	• डहर के कांटा
	• निसैनी
	• नवा बिहान
	• रामकथा
○ द्वारिका प्रसाद तिवारी (विप्र) — गीत	• गांधी गीत
	• फागुन गीत
	• सुराज गीत
	• कछु-काही
	• राम व केंवट संवाद
	• धमनी हाट (कविता)
○ श्रीकांत वर्मा (बिलासपुर)	• झाड़ी
	• जलसा घर
	• भटका मेघ
	• मगध (साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित)

❖ हरि ठाकुर	<ul style="list-style-type: none"> छत्तीसगढ़ी गीत अऊ कविता लोहे के नगर, सुरता के चंदन <p>नोट:- घर द्वार फिल्म का गीत लिखा जिसे सुमन कल्याण (रायगढ़) एवं मोहम्मद रफी द्वारा गाया।</p>
❖ डॉ. शंकर शेष फिल्म	<ul style="list-style-type: none"> छत्तीसगढ़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन 1. घरीदा 2. दुरियां
❖ नारायण लाल परमार	<ul style="list-style-type: none"> सुरुज नई मरे कावर भर धूप मतवार <p>[CG PSC (pre) 2010]</p>
❖ खुबचंद बघेल	<ul style="list-style-type: none"> करम छडहा ऊंच-नीच, लेड़गा सुजान, बेटेवा बिहाव, जनरैल सिंह (सभी नाटक है) <p>[CG PSC (Mains) 2014], [CG Vyapam (FCPR) 2016] [CG PSC (ADPO) 2013]</p>
❖ केयूर भूषण	<ul style="list-style-type: none"> प्रथम रविशंकर शुक्ल पुरस्कार प्राप्तकर्ता फूटहा करम (एक नारी के नियति पर आधारित उपन्यास) <p>[C G PSC (Mains) 2012], [CG PSC (MI) 2010]</p>
	<ul style="list-style-type: none"> राणी ब्राम्हण की दूर्दशा आंसू म फिले अंचरा (कहानी) कुल के मरजात <p>[CG PSC (Mains) 2012 M.]</p>
❖ शिवशंकर शुक्ल	<ul style="list-style-type: none"> दियना के अंजोर गोंगरा रधिया <p>[CG PSC (MI) 2010]</p>
❖ परदेशी राम वर्मा	<ul style="list-style-type: none"> मै बैला नो ह आँवा (उपन्यास) <p>[CG PSC (Mains) 2012 M.]</p>
❖ टिकेन्द्र टिकरिया	<ul style="list-style-type: none"> साहूकार से छुटकारा
❖ प. मलिक राम त्रिवेदी	<ul style="list-style-type: none"> रागराज्य (नाटक) <p>[CG PSC (PRE.) 2016]</p>
❖ संजीव बक्शी	<ul style="list-style-type: none"> भुलन कान्दा <p>[CG Vyapam (FCPR) 2016]</p>
❖ अमृतलाल दुबे	<ul style="list-style-type: none"> तुलसी के बिरवा जगाय
❖ नरेन्द्र देव वर्मा (बिलासपुर)	<ul style="list-style-type: none"> अपूर्वा, सुबह की तलाश, सोनहा बिहान, ढोलामारु, मोला गुरु बनई लेते

○ भगवती सेन	• नदियां गरे प्यास
○ पं. सुन्दरलाल शर्मा	• दानलीला (श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र पर आधारित श्रृंगार रस में) [CGPSC (Mains) 2014], [CGPSC (MI) 2014]
उपन्यास	• जेल पत्रिका (कृष्ण जन्म स्थान पत्रिका)
	• दुलरवा
	• पहलाद चरित्र, ध्रुव चरित्र
	• सच्चा सरदार, करुणा पच्चीसी
	• सीता परिणय
○ सुकलाल पाण्डे	• शेक्सपीयर की "कांमेडी ऑफ एररस" का शीर्षक - भूल-मैलया छत्तीसगढ़ी में अनुवाद, गीयां
○ विद्याभूषण मिश्र	• छत्तीसगढ़ी गीतमाला
○ हेमनाथ यदू	• छत्तीसगढ़ी रामाऐन
○ आरंख चन्द कांत	• नांवा सूरज के नांवा अंजोर
○ रमेश्वर वैष्णव	• नोनी वेदरी
○ बद्री विशाल परमानंद	• पियूरी लिखे तोर भाग
○ हनुमंत नायडू (राजदीप)	• प्रथम छत्तीसगढ़ी फिल्म " कहि देये संदेश" का गीत लिखा
○ गोविंदराम विठ्ठल	• नागलीला
○ सीताराम मिश्र	• सुरही गईया
○ नरसिंह दास वैष्णव	• जन्मांध भक्त कवि है।
	• जानकी माई हित विनय
	• नरसिंह चौंतीसा
	• शिवायन
○ गिरिवर दास वैष्णव	• "छत्तीसगढ़ सुराज" गीत
	• बुढ़ावा विहाव, पुरवजों के पराक्रम।
○ लाला जगदलपुरी	• बस्तर के संस्कृति एवं इतिहास (हल्दी एवं भतरी शब्द का प्रयोग)
○ केदारनाथ ठाकुर	• बस्तर की खुनी इतिहास
	• बस्तर भूषण
○ आचार्य नरेन्द्र देव वर्मा	• सुबह की तलाश
	• सोनहा बिहान
	• अपूर्वा
	• मोला गुरु बनाइ लेथे
○ मेदनी प्रसाद पाण्डेय	• कछेरी (व्यंग रचना) [CGPSC (pre) 2012]

अन्य

1. कृष्ण कुमार शर्मा - छेरछेरा (उपन्यास)
(विनोवा भावे के आदर्श एवं अशिक्षित ग्रामीण परिवेश पर आधारित रचना है।)

❖ प्राचीन :- छत्तीसगढ़ी साहित्य प्रेम व वीरता पर आधारित होती थी जो अहिमन रानी, केवला रानी, रेखा रानी, फूलवासन गाथा (सीता - लक्ष्मण की कहानी), पण्डवानी (द्रौपदी के तीजा पर वर्णित)।

❖ मध्यकाल :- में वीरगाथा पर आधारित रचना फूलकुंवर देवी की गाथा, कल्याणसाय की गाथा, गोपल्ला गीत, दोलामार

- कबीर पंथ स्थापना (1520) - धनीधरम दास प्रथम कवि माने जाते हैं।
- संत गुरु घासीदास - संतनाम पंथ संस्थापक
- गोपाल प्रसाद मिश्र रचना - राजसिंह (कलचुरी वंश)
- रतनपुर महात्म्य, खूब तमाशा, सुदामा चरित्र भक्ति चिन्तामणी,

[CGPSC (EAP) 2016], [CGPSC (AS) 2009], [CGPSC (mains) 2011], [CGPSC (mains) 2012]

- माखनलाल मिश्र - रामायण प्रताप रचना को पूर्ण किया।
- पहलाद दुब - जयचन्द्रिका
- लक्ष्मण कवि - भोंसला वंश प्रशस्ति
- बाबूरेवा राम - छत्तीसगढ़ी में भजनों में व्यापक प्रचार इन्हीं द्वारा
- छ.ग. का प्रथम इतिहासकार भी कहा जाता है।
- गीता माधव, गंगालहरी, सार रामायण
- विक्रम विलास, रत्नपरीक्षा, कृष्णमाला, रामाश्वमेध
- तारीके-ए-हैदरवंशी

[CGPSC (AP) 2009]

[CGPSC (AS) 2009]

❖ आधुनिक काल :-
पूर्व में वर्णित साहित्यकार

प्रमुख साहित्य समिति एवं संगठन

- भारतेन्दु साहित्य समिति - विलासपुर
- छत्तीसगढ़ी राज्य भाषा आयोग - रायपुर
- हिन्दी साहित्य परिषद (2006) - रायपुर
- साकेत साहित्य परिषद - राजनांदगांव
- वातायन साहित्य एवं विचार मंच - दुर्ग
- श्री पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी श्रृजान पीठ - भिलाई

पत्र - पत्रिकाएं

● प्रथम समाचार पत्र

- छत्तीसगढ़ मित्र (1900)
- प्रथम साप्ताहिक समाचार पत्र
- माधव राव सप्रे द्वारा प्रकाशित
- स्थान - पेंडारोड, बिलासपुर से
- यह तीन सालों तक प्रकाशित हुआ।

● प्रथम दैनिक अखबार

- 'महाकौशल' (1951 से) साप्ताहिक - (अम्बिकाचरण शुक्ल)
- संपादक - पं. रविशंकर शुक्ल

नोट - 1937 में यह पहले साप्ताहिक था। बाद में 1951 में प्रतिदिन हुआ।

○ छ.ग. में समाचार पत्रों का इतिहास -

- | | | |
|-----------|--|---|
| • 1900 | - छत्तीसगढ़ मित्र | - माधवराव सप्रे |
| • 1907 | - हिन्दू केसरी | - माधवराव सप्रे |
| • 1915 | - सूर्योदय | - कन्हैया लाल शर्मा |
| • 1921 | - अरुणोदय | - डा. प्यारेलाल सिंह |
| • 1922-23 | - जेल पत्रिका | - पं. सुन्दरलाल शर्मा |
| • 1924 | - कान्यकुब्ज | - पं. रविशंकर शुक्ल |
| • 1924-25 | - विकास | - बिलासपुर विकास परिषद् द्वारा (कुलदीप सहाय) |
| • 1934-35 | - उत्थान | - रायपुर विकास परिषद् द्वारा (पं. सुन्दरलाल त्रिपाठी) |
| • 1936 | - महाकौशल | - अम्बिका चरण शुक्ल (साप्ताहिक) |
| • 1947 | - छ.ग. केसरी | - दीपचंद डागा |
| • 1951 | - महाकौशल | - पं. रविशंकर शुक्ल (प्रथम दैनिक) |
| • 1959 | - नई दुनिया | - स्व. श्री मायाराम सुरजन (रायपुर से प्रकाशित) |
| | - 1974 में इसका नाम देशबंधु रखा गया | |
| | - यह प्रदेश का निरंतर प्रकाशित होने वाला सबसे पुराना अखबार है। | |
| • 1961 | - युगधर्म | |
| • 1984 | - अमृत संदेश | - अब नुम्भारत |
| • 1988-94 | - दैनिक भास्कर | |
| • 1990 | - देशबन्धु | |
| • 2001 | - हरिभूमि | |

गैर हिन्दी भाषी प्रकाशन

- 1953 में छ.ग. के प्रथम अंग्रेजी भाषा साप्ताहिक इंडिया कालिंग का प्रकाशन हुआ जो जल्द ही बंद हो गया।
- 1959 से श्री सतीश बनर्जी द्वारा दंडकारण्य समाचार साप्ताहिक जगदलपुर से आरंभ हुआ। दंडकारण्य समाचार अंग्रेजी हिन्दी और स्थानीय हल्बी में प्रकाशित किया जाता था।
- 1974 में हितवाद और मध्यप्रदेश क्रानिकल का रासपुर से प्रकाशन प्रारंभ किया गया
- हिजाय के पीछे उर्दू साप्ताहिक रायपुर से प्रकाशित
- प्रस्तुति व गुजरात दूत दोनों गुजराती साप्ताहिक रायपुर से ही प्रकाशित होते हैं।
- जगदलपुर से साप्ताहिक समाचार पत्र वस्तूरिया हल्बी व हिन्दी दोनों में 1984 से प्रकाशित हो रहा है जिसके सम्पादक लाला जगदलपुरी थे।
- छत्तीसगढ़ी भाषा का एकमात्र पत्र छ.ग. सेवक रायपुर से प्रकाशित होता है।
- सिंधी भाषा में रायपुर से लोक सेवा, एवं बिलासपुर व रायपुर से उर्दू में सिंधुड़ी नामक पत्र निकलता है।

साहित्यकारों का विस्तृत वर्णन

1. हीरालाल काव्योपाध्याय

- यह छत्तीसगढ़ के "पाणिनी" के नाम से प्रसिद्ध है।
- इनके द्वारा सर्वप्रथम 1890 में छत्तीसगढ़ व्याकरण का निर्माण किया गया।

[CGPSC (CMO Paper-2) -2010], [CG Vyapam (T C) 2010]

[CGPSC (Mains) 2012 M]

2. लोचन प्रसाद पाण्डेय

- जन्म- बालपुर (जांजगीर-चांपा)
- छत्तीसगढ़ के प्रथम नाटककार साहित्य के क्षेत्र में इनका अतुलनीय योगदान है।
- रचनाएँ - कलिकाल (छत्तीसगढ़ का प्रथम नाटक), दो मित्र (उपन्यास)

3. बंशीधर पाण्डेय

- जन्म- बालपुर (जांजगीर-चांपा)
- छत्तीसगढ़ के प्रथम कहानीकार हैं।
- इनके उपन्यास का नाम "हीरू के कहनीज" है।

4. मुकुटधर पाण्डेय

- जन्म- बालपुर (जांजगीर-चांपा)
- छत्तीसगढ़ में इन्हें छायावाद काव्य का जनक माना जाता है।
- रचनाएँ - कुररी के प्रति (छायावादी कविता) पूजा के फूल, शैलबाला, मेरा हृदयदान

[CGPSC (MI) 2014]

नोट - • मुकुटधर पाण्डेय के द्वारा कालिदास द्वारा लिखी गई रचना "मेघदूतम्" का छत्तीसगढ़ भाषा में अनुवाद किया गया।

[CGPSC (Mains) 2016], [CGPSC (SSE) 2016]

[CGPSC (ACF) 2016]

- सन् 1976 में इन्हें पद्मश्री सम्मान मिला।

5. गजानंद माधव मुक्तिबोध

- छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध साहित्यकार जो प्रयोगवाद कवि के रूप में जाने जाते हैं।
- ये छत्तीसगढ़ के नीलकण्ठ के नाम से प्रसिद्ध हैं।
- रचनाएँ - 1. अंधेरे में, 2. ब्रम्हराक्षस, 3. चांद का मुह टेढ़ा, 4. कामायानी एक पुनर्विचार, 5. भूरी-भूरी खाक धूल, 6. साहित्य एक डायरी,

6. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

- इन्होंने सरस्वती पत्रिका का संपादन किया गया।
- छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध साहित्यकार जिनका जन्म खैरागढ़ (राजनांदगांव) में हुआ था।
- रचनाएँ - क्या लिखूँ, पंचपात्र, प्रबन्ध परिजात (निबंध) प्रयासचित, झलमला, कारी, अश्रुदल (यह सभी कहानियाँ हैं।)

[CGPSC (ADIHS) -2014]

7. निरूपमा शर्मा

- छत्तीसगढ़ की प्रथम कवयित्री
- इनकी कविता का नाम "पतरंगी", बूंदों की सागर है।
- निरूपमा शर्मा को छ.ग. की सोनाबाई के नाम से जाना जाता है।
- निरूपमा शर्मा छत्तीसगढ़ी भाषा की प्रथम महिला साहित्यकार हैं।

[CGPSC (CMO) -2010]

8. माधव राव सप्रे

- छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के जनक [CG PSC (Lib.) 2014]
- इन्होंने वर्ष 1900 में छ.ग. के प्रथम समाचार पत्र "छत्तीसगढ़ मित्र" का पेंडारोड (विलासपुर) से प्रकाशन किया।
[CG PSC (Lib.) 2014], [CG PSC (Mains) 2014]
- छ.ग. मित्र मासिक पत्रिका था।
- 1908 में हिन्दू केसरी का प्रकाशन किया। यह बालगंगाधर से प्रभावित थे।

9. पं. सुन्दर लाल शर्मा

- इन्हें छत्तीसगढ़ में प्रबंध काव्य का जनक माना जाता है।
- प्रमुख रचनाएँ - दानलीला (प्रबंधकाव्य), प्रहलाद चरित्र, ध्रुव चरित्र, करुणा, पच्चीसी, दुलरवा
- छत्तीसगढ़ी भाषा में मासिक पत्रिका का प्रकाशन।
- श्रीकृष्ण जन्मस्थान (1922 में रायपुर जेल के दौरान रचना हुई)
- पं. सुन्दरलाल शर्मा को छ.ग. का गांधी कहा जाता है।
- पं. सुन्दरलाल शर्मा ने छत्तीसगढ़ी भाषा में रागायण की रचना की।

[CG Vyapam (SI) -2011]

[CG PSC (Sah. Sanch.) -2013]

10. रामदयाल तिवारी

- यह छत्तीसगढ़ के विद्यासागर कहलाते हैं।
- गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
- इन्होंने साकेत व यशोधरा जैसी राष्ट्रीय रचना की समीक्षा की थी।
- प्रमुख रचनाएँ - गांधी भीमांसा, गांधी एक्सप्रेस, हमारे नेता व स्वराज्य प्रश्नोत्तरी (बाल साहित्य)

11. गोपाल मिश्र

- यह छत्तीसगढ़ के वाल्मिकी कहलाते हैं।
- गोपाल मिश्र कलचुरी राजा राजसिंह का दरबारी कवि था।
- कलचुरि कालीन साहित्यकार।
- प्रमुख रचनाएँ - खूब तमाशा, सुदामा चरित्र, जैमिनी, अश्वमेघ
- प्रबंध काव्य - भक्ति चिंतामणि, रामप्रताप (रामप्रताप की रचना इनके पुत्र माखन मिश्र के द्वारा पूर्ण की गई)

12. बाबू रेवाराम

- यह ब्रिटिश काल के साहित्यकार थे। इन्होंने कलचुरि काल का वर्णन किया है।
- बाबू रेवाराम छत्तीसगढ़ी भजनों को छत्तीसगढ़ी भाषा में प्रचार करने वाले कवि के रूप में जाने जाते हैं।
- प्रमुख रचनाएँ - तारीखे-ए-हैहयवंशीय, रतनपुर का इतिहास, माता के भजन, विक्रम, विलास, गंगालहरी, नर्मदाष्टक, सार रामायण वीथिका,

13. दलपतराम राव

- खैरागढ़ के राजा लक्ष्मीनिधि के चारण कवि थे।
- इन्होंने 1494 ई. में छत्तीसगढ़ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।

14. श्रीकान्त वर्मा

- इनकी कविता संग्रह मगध को साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान किया गया था। यह राज्यसभा सदस्य भी रह चुके हैं।
- प्रमुख रचनाएँ - माया दर्पण, झाड़ी, जलशा धर, भटका मेघ, मगध।

20. प्यारेलाल गुप्त

- प्रमुख रचनाएँ - फ्रांस के राज्य क्रांति, ग्रीस का सुधार, प्राचीन छ.ग., पुष्पलता,
- अन्य रचनाएँ - 1. गांव के फूल घोले गोठियाथे, 2. धान के लुआई, 3. लवंगलता

21. श्यामलाल चतुर्वेदी

- रचनाएँ - बेटी के विदा, पराभर लाई, भोलवा भोलाराम बनिस

22. नारायण लाल परमार

- प्रमुख रचनाएँ - सूरज नई मरय, सोने के माली, कांवर भर धूप, रोशनी का घोषणा पत्र।

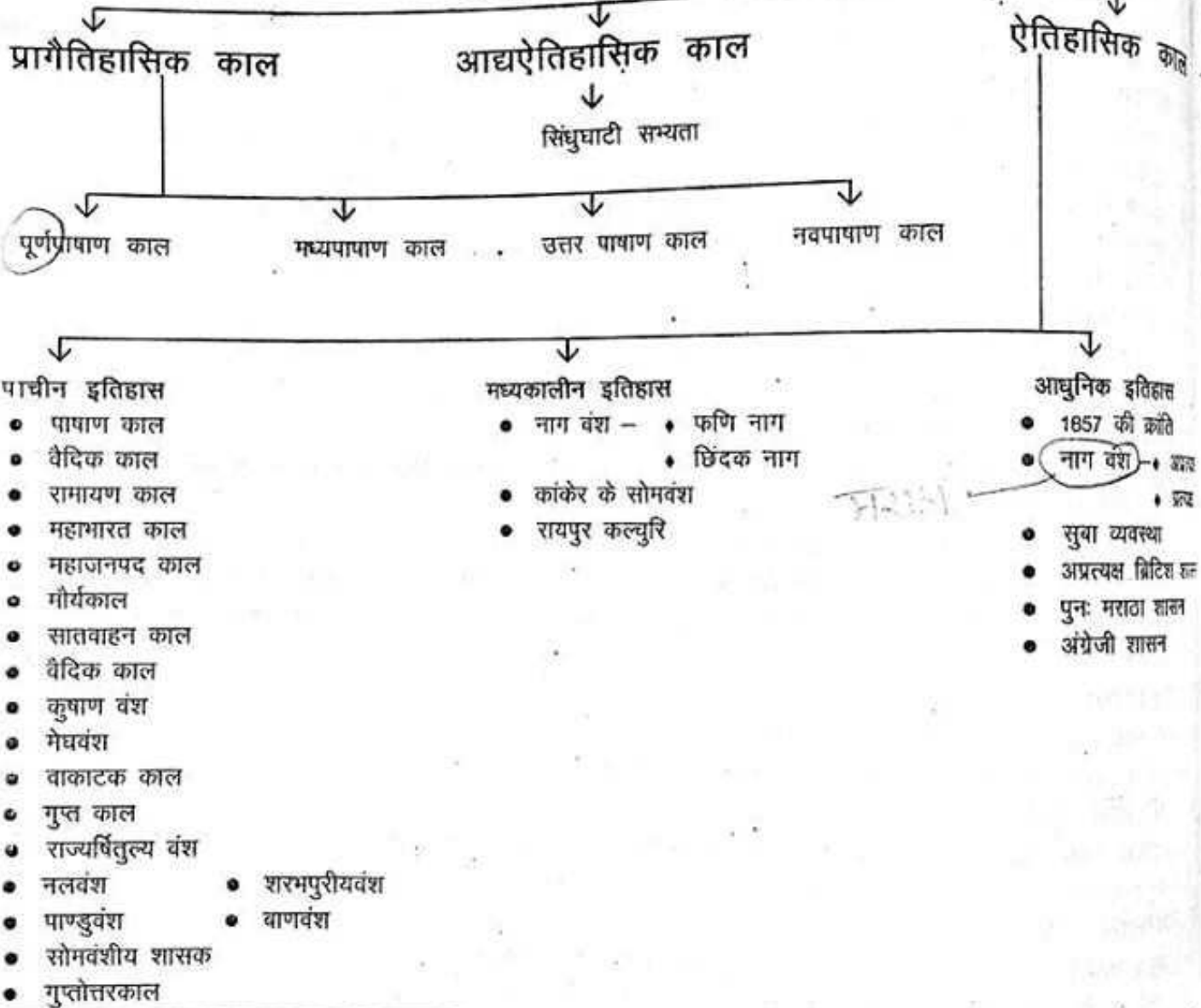
29

छत्तीसगढ़ का इतिहास

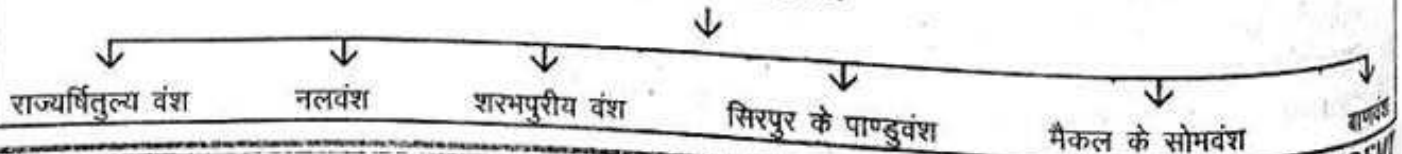
छ.ग. का इतिहास, भारत के इतिहास से प्रभावित रहा है। जो मानव सभ्यता के प्रारंभिक विकास से लेकर आधुनिक काल के लम्बे इतिहास का साक्षी रहा है। लिपी के विकास के आधार पर प्रदेश के इतिहास को तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है।

1. प्रागैतिहासिक काल 2. आद्यऐतिहासिक काल 3. ऐतिहासिक काल

छ.ग. का इतिहास



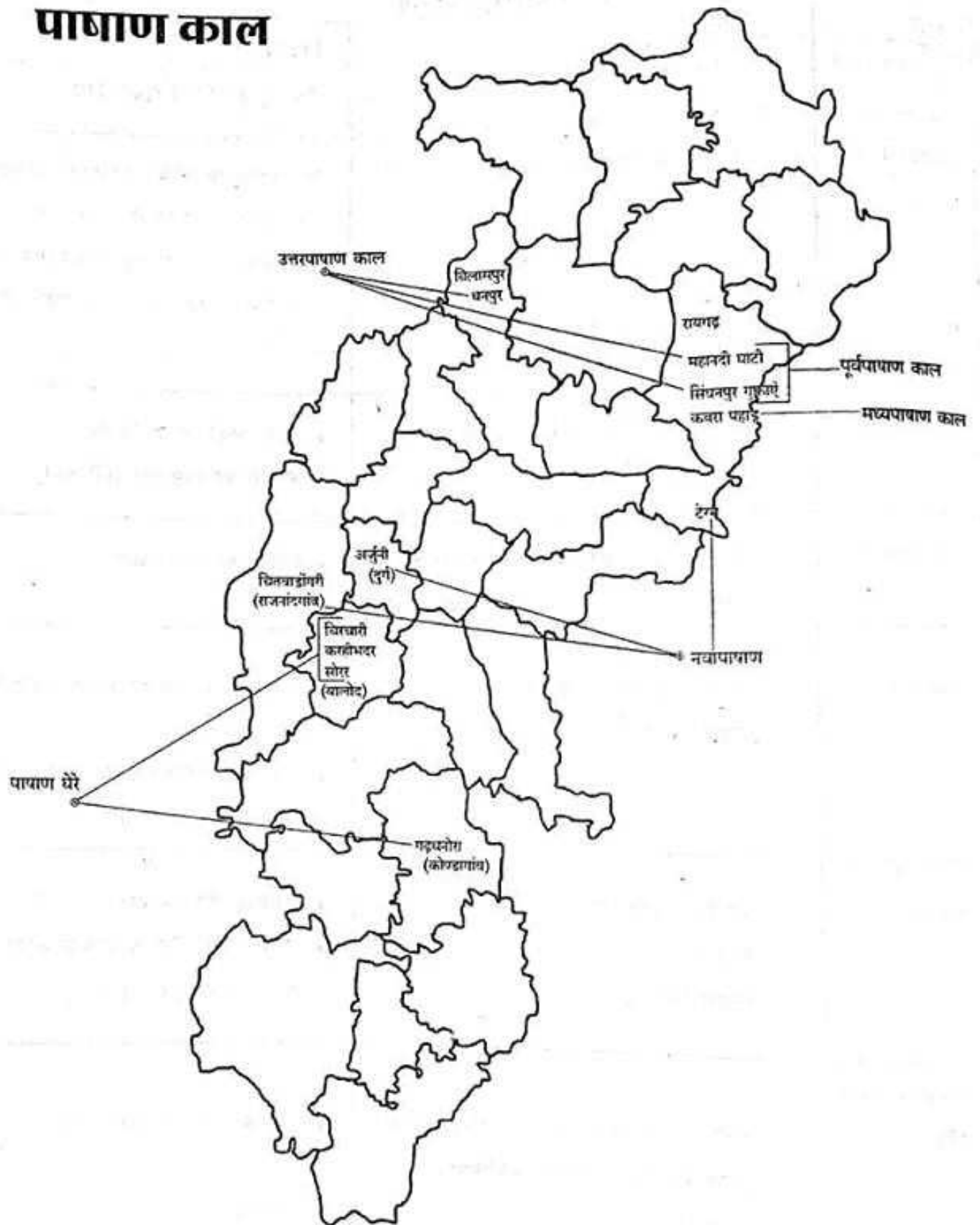
स्थानिय राजवंश



1. प्रागैतिहासिक काल

क्र.	काल	स्थल	विशेष
1.	पूर्व पाषाण काल	रायगढ़-महानदी घाटी एवं सिधनपुर गुफाएँ	पत्थर के हस्तचलित कुदाल मिले
2.	मध्यपाषाण काल	कबरा पहाड़ (रायगढ़)	लाल रंग के छिपकली, घड़ियाल, कुल्हाड़ी, सांभर आदि के चित्रकारी इसके अलावा मध्यपाषाणकाल के महत्वपूर्ण साक्ष्य लम्बे फलक वाले औजार, अर्द्धचन्द्रकार लघु पाषाण औजार आदि हैं।
3.	उत्तरपाषाण काल	धनपुर (बिलासपुर) महानदी घाटी (रायगढ़) सिधनपुर गुफाएँ रायगढ़	<ul style="list-style-type: none"> मानव आकृतियों का चित्रण औजारों की आकृतियों खुदी हुई।
4.	नव पाषाण काल	अर्जुनी (दुर्ग) चितवाडोंगरी (राजनांदगांव) टेरम (रायगढ़) [CG PSC (PRE.)2016]	<ul style="list-style-type: none"> छिद्रित धन औजार प्राप्त
5.	पाषाण घेरे	बालोद-करहीभदर, धिरचारी, सोरर गढ़धनौरा-कोण्डागांव	<ul style="list-style-type: none"> शवों को दफनाकर बड़े पत्थरों से ढँक दिया जाता था। मध्य पाषाण युगीन 500 घेरे स्मारक प्राप्त (खोज-कामले व मिश्र द्वारा)
6.	शैल चित्र	रायगढ़, कबरापहाड़ सिधनपुर चितवाडोंगरी (दुर्ग)	<ul style="list-style-type: none"> सर्वाधिक शैलचित्र प्राप्त मानवाकृतियों, सीढ़ी व डण्डे के आकार में आखेट करता हुआ मनुष्य
7.	लौहयुगीन पाषाण स्तंभ	करहीभदर, धिरचारी, सोरर करकामाठा (बालोद) धनौरा (कोण्डागांव) सरगुजा-जोगीमारा, सीतावेगरा	<ul style="list-style-type: none"> लोहे के औजार व मृदभांड प्राप्त लौहपात्र

पाषाण काल



विशेष तथ्य

1. रायगढ़ जिले के करमागढ़, बसनाझर, ओंगना, लेखाभाड़ा, बेनीपाट, बोटल्दा आदि से शैलचित्र प्राप्त हुए हैं।
2. प्राचीन गुफा - सिंघनपुर फिर कबरा पहाड़
3. बालोद जिले के धिरचारी, सोरर, करहीभदर से पाषाणधरोहरों के अवशेष मिले हैं।
4. कोण्डागोव जिले के गढधनोरा, गढचंदेला, राजपुर आदि से पाषाण काल के औजार मिले हैं।
5. सर्वाधिक जानकारी - कबरा पहाड़
6. सबसे लम्बी गुफा - बोटल्दा की गुफा
7. इस काल के सर्वाधिक शैलचित्र रायगढ़ जिले से मिले हैं।
8. छ.ग. के शैलचित्रों की खोज सर्वप्रथम 1910 में अंग्रेज इतिहासकार एंडरसन ने किया था।
9. नवपाषाणिक अवशेषों की सर्वप्रथम जानकारी डॉ. रमेन्द्रनाथ मिश्र व डॉ. भगवान सिंह ने किया।

2. आद्यऐतिहासिक काल (2300 - 1750 ई.पू.)

इस काल के अंतर्गत सिंधुघाटी सभ्यता/हड़प्पा संस्कृति/कांस्ययुगीन सभ्यता को रखा गया, जिसका साक्ष्य छ.ग. में नहीं मिला है।

3. ऐतिहासिक काल (1500 - 600 ई.पू.)

इस काल के अंतर्गत वैदिक सभ्यता का काल आता है। जिसे दो भागों में बांटा गया है।

1. ऋग्वैदिक काल (1500 - 1000 ई.पू.) - इस काल में ऋग्वेद का निर्माण हुआ एवं सभ्यता के निर्माता आर्य इस काल में पंचनद क्षेत्र (उत्तर भारत) तक विस्तृत थे। अतः ऋग्वेद में छ.ग. का वर्णन नहीं मिलता है।
2. उत्तर वैदिककाल (1000 - 600 ई.पू.) - इस काल में आर्यों का विस्तार मध्य भारत में होने लगा तथा नर्मदा नदी को रेवा नदी के रूप में भारत में उल्लेखित किया गया है अतः कह सकते हैं कि उत्तर वैदिक काल में छ.ग. का वर्णन मिलता है।

रामायण काल

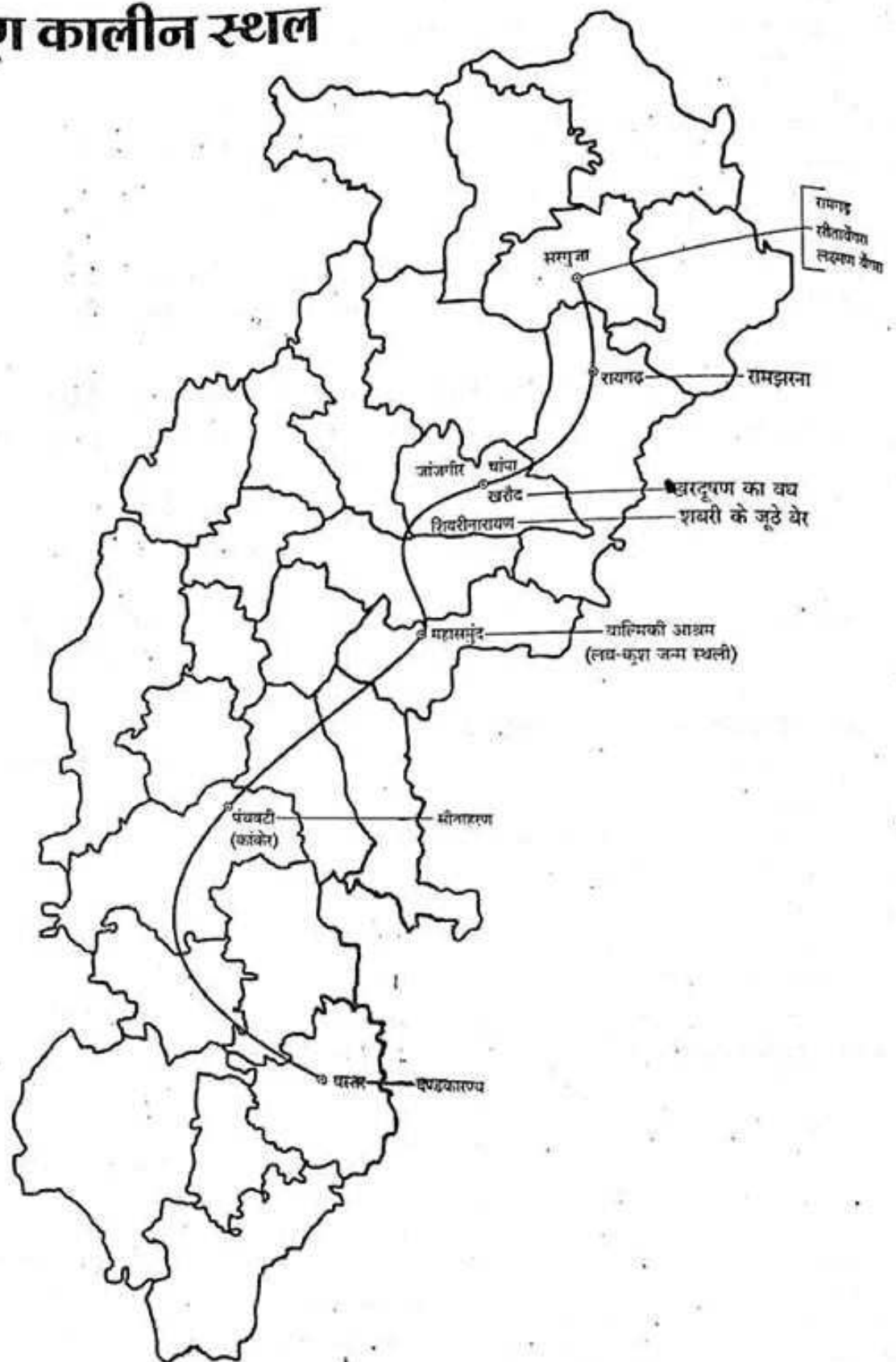
- ♦ इस काल में छ.ग. का नाम दक्षिण कोसल था। (राजधानी - कुशस्थली) [C.G.PSC (ACF)2016]
- ♦ इस काल में वस्तर का नाम दण्डकारण्य था।
- ♦ दक्षिण कोसल के राजा भानुवंत थे जिनकी पुत्री कौशल्या का विवाह उत्तर कोसल के राजा दशरथ से हुआ, किन्तु भानुवंत के पुत्र नहीं होने के कारण यह राज्य राजा दशरथ को मिल गया।
- ♦ इस समय दक्षिण कोसल की भाषा - कोसली (छ.ग. की प्राचीन भाषा कोसली था) [CG PSC (PRE.)2016]

रामायण कालीन प्रमुख स्थान :-

- | | |
|--------------------------------|--|
| 1. सरगुजा | - रामगढ़, सीतायेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा |
| 2. रायगढ़ | - रामझरना |
| 3. खरौद | - खरदूषण का वध (जांजगीर-चांपा) |
| 4. शिवरीनारायण (जांजगीर-चांपा) | - मान्यता है कि भगवान राम ने यहां शबरी के जूठे बेर खाए थे। |
| 5. पंचवटी (कांकेर) | - यहां से सीताहरण का उल्लेख मिलता है। |
| 6. वाल्मीकी आश्रम (महासमुंद) | - लव कुश की जन्मस्थली है। |
| 7. दण्डकारण्य (वस्तर) | - भगवान राम ने यहां अपने वनवास के दौरान कुछ समय व्यतीत किये। |

नोट - भगवान राम ने अपने अंतिम समय में दक्षिण कोसल को कुश (राजधानी - कुश स्थली), जबकि उत्तर कोसल को लव (राजधानी श्रावस्ती) राज कार्य दिये।

रामायण कालीन स्थल



महाभारत काल (Mahabharat Period)

- ♦ इस काल में छ.ग. का नाम - प्राक्कोशल
- ♦ बस्तर का नाम - कान्तार

महाभारत कालीन स्थल

स्थान (Place)	प्राचीननाम (Ancient Name)	जिला (Dist)	विशेष (Remarks)
1. सिरपुर	चित्रांगदापुर	महासमुंद	अर्जुन के पुत्र भद्रबाहन की राजधानी
2. रतनपुर	मणिपुर	बिलासपुर	ताम्रध्वज की राजधानी
3. खल्लारी	खल्लवाटिका	महासमुंद	लाक्षागृह, भीमखोह, भीम के पद चिन्ह
4. गुंजी	भण्डार	जांजगीर-चांपा	ऋषभ देव

बौद्ध धर्म

- ♦ बौद्ध ग्रंथ अवदान शतक से ज्ञात होता है, कि गौतम बुद्ध कुछ समय के लिए सिरपुर (छ.ग.) आए थे।
- ♦ छठवीं शताब्दी में बौद्ध भिक्षुक प्रभु आनंद ने सिरपुर में स्थाविक विहार एवं आनंत कुटि विहार का निर्माण कराया।
- ♦ 639 ई. में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सिरपुर एवं मल्हार की यात्रा की थी।

जैन धर्म

- ♦ ऋषभदेव की जानकारी - गुंजी/दमाऊदरहा (जांजगीर चांपा)
- ♦ पार्श्वनाथ की जानकारी - नगपुरा (दुर्ग)
- ♦ महावीर की जानकारी - आरंग (रायपुर)

[CGPSC (Pre) 2014]

महाजनपद काल (Mahajanpad Period)

- ♦ भारतीय इतिहास में यह काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना गया है। क्योंकि यहां से भारत का व्यवस्थित इतिहास मिलना प्रारंभ होता है इस दौरान संपूर्ण भारत को 16 महाजनपदों में बांटा गया था। इस काल में छ.ग. चेदि महाजनपद (Chedi Mahajanpad) के अंतर्गत शामिल था।

चेदि महाजनपद

- ♦ राजधानी - शक्तिमति
- ♦ क्षेत्र - बुंदेलखण्ड का पठार
- ♦ इस काल में छ.ग. का चेदिसगढ़ (Chedisgarh) के नाम से जाना जाता था और इसी का अपभ्रंश छत्तीसगढ़ बना।

1. मौर्य काल (Maury Period) (322 - 185 ई.पू.) (राजधानी - पाटलीपुत्र)

- ♦ इस काल का साक्ष्य ह्वेनसांग की रचना सी-यू-की में मिलता है।
- ♦ रामगढ़ की पहाड़ी में स्थित जोगी मारा की गुफा (Cave Of Jogimara) मौर्यकालीन साक्ष्य है। [CGPSC (ADI) 2017]
- ♦ जिसकी भाषा पाली एवं लिपी, ब्राह्मी है। (Pali Language and brahmi script)
- ♦ यहाँ देवदत्त नर्तक एवं सुतनुका नर्तिका का प्रेम गाथा का वर्णन है। [C.G PSC (Mains) 2011]
- ♦ इस गुफा में उपस्थित चित्र-मुर्तिकला का उदाहरण है। [CGPSC (ABEO) 2014]
- ♦ मौर्यकालीन सिक्कों की प्राप्ति - अकलतरा, ठठारी(जांजगीर-चाम्पा), बिलासपुर, बारगांव (रायगढ़)
- ♦ मौर्यकालीन आहत मुद्राएं - तारापुर, उड़ेला (रायपुर)
- ♦ प्राचीन छ.ग. का उत्तरी भाग मौर्य सम्राज्य में सम्मिलित था, जिसका पुष्टि अशोक के कलिंग अभिलेख (Kalinga Edict) से होती है। [CGPSC (ADI) 2017]

छत्तीसगढ़ इतिहास का घटनाक्रम

वंश क्रम	कालावधी	संस्थापक/प्रथम शासक	अंतिम शासक	राजधानी
• पाषाण काल	-	-	-	-
• वैदिक काल	1500 ई.पू. - 500 ई.पू.	-	-	-
• रामायणकाल	-	-	-	श्रावस्ती व कुशस्थली
• महाभारतकाल	-	-	-	-
• महाजनपदकाल	(छठवीं शताब्दी ई.पू.)	-	-	चेदिसमहाजनपद
• नंद मौर्यकाल	323 ई.पू. - 187 ई.पू.	चन्द्रगुप्त मौर्य	बृहद्रथ	पाटली पुत्र
• सातवाहन काल	-	-	-	प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र)
• कुषाण वंश	-	-	-	-
• मेघवंश	1-2वीं शताब्दी	-	-	-
• वाकाटक वंश	3-4थी शताब्दी	महेन्द्र सेन	-	नंदीवर्धन (नागपुर)
• गुप्त वंश	319-550 ई. तक	श्रीगुप्त	-	पाटली पुत्र
• राज्यर्षि तुल्य वंश	4-6वीं शताब्दी तक	-	-	आरंग
• नलवंश	5-12 वीं शताब्दी तक	शिशुक	नरेन्द्रधवल	पुस्करी/कोरापुट
• शरभपुरीय वंश	5वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं 6वीं शताब्दी के प्रारम्भ में	शरभराज	प्रवरराज-II	सिरपुर/मल्हार/सारंग
• पाण्डुवंश	6-7 वीं शताब्दी - 8वीं तक	उदयन	-	सिरपुर
• बाणवंश	9वीं शताब्दी	-	-	पाली (कोरवा)
• सोमवंशीय शासक	-	-	-	-
• नाग वंश	-	-	-	-
(A) फणि नाग	9वीं से 15 वीं शताब्दी तक	अहिराज	मोर्निम देव	कर्वा
(B) छिन्दक नाग	10वीं शताब्दी आरम्भ से 14वीं शताब्दी तक (1023-1324 ई.तक)	नृपतिभूषण	हरिशचन्द्र	चक्रकोट/भ्रमरकोट
• कल्चुरी वंश	1000 ई. - 1741 ई. तक	कलिंगराज	रघुनाथ सिंह	तुम्माण/रतनपुर
• कांकेर के सोमवंश	1191 - 1320 ई.	सिहराज	-	कांकेर
• रायपुर कल्चुरी	14वीं - 18वीं शताब्दी तक	अन्नदेव	-	बस्तर/जगदलपुर
• भोसला शासन	1741 - 1854 तक	-	-	-
(A) अप्रत्यक्ष मराठा शासक	1741 - 1758 ई.	-	-	रतनपुर
(B) प्रत्यक्ष मराठा शासक	1758 - 1787 ई.	बिम्बाजी भोसले	-	रतनपुर
(C) सुबा व्यवस्था	1787 - 1818 ई.	-	-	रतनपुर
(D) अप्रत्यक्ष ब्रिटिश शासक	1818 - 1830 ई.	-	-	रतनपुर
(E) पुनः मराठा शासक	1830 - 1854 ई.	रघुजी तृतीय	-	रतनपुर → रायपुर
• अंग्रेजी शासन	1854 - 1947	-	-	रायपुर

2. सातवाहन वंश (Satvahan Period) (72-200 ई.)

- ♦ राजधानी - प्रतिष्ठान(महाराष्ट्र) में
- ♦ मुद्रा - मल्हार (विलासपुर) में
- ♦ चकरवेड़ा (विलासपुर) में
- ♦ सातवाहन शासक राजा अपीलक की मुद्रा - बालपुर (जांजगीर-चांपा), मल्हार (विलासपुर)
- ♦ राजा वरदत्तश्री की जानकारी - गुंजी शिलालेख (जांजगीर-चांपा)
- ♦ सातवाहन कालीन काष्ठ स्तंभ (Woodenpillar) की जानकारी - किरारी (जांजगीर-चांपा 1921) जिसे महंत घासीदास संग्रहालय (रायपुर) में रखा गया।
- ♦ सातवाहन काल में रोमकालीन स्वर्णमुद्राएं - चकरवेड़ा (विलासपुर)
- ♦ उपरोक्त सिक्का एवं काष्ठ स्तंभ से है। यह सिद्ध होता है कि सातवाहन वंश का फैलाव छ.ग. में था।
- ♦ सातवाहन कालीन शासकों ने बौद्धभिक्षु नागार्जुन के लिए - पांच मंजिला सांघाराम बनवाया

3. कुषाण वंश (Kushan Period)

- ♦ कुषाण कालीन तांबे के सिक्के -
- 1. बिलासपुर
- 2. तेलीकोट (रायगढ़)

[CG Vyapam (FI)-2007]

4. मेघवंश (Megh Dyanasty) (100-200 ई.पू.)

- ♦ छ.ग. में मेघवंशीय शासक शिवमेघ व यगेघ की जानकारी मिलती है।

5. वाकाटक वंश (Vakatak Dynasty) (300 -400 ई.पू.)

- काल - 3री से 4थी सदी।
- राजधानी - नंदिवर्धन (नागपुर)
- समकालीन वंश - गुप्त वंश तथा नल वंश

प्रमुख शासक

1. महेन्द्रसेन :- प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्र गुप्त के दक्षिण विजय अभियान के दौरान दक्षिण कोसल के राजा महेन्द्र सेन एवं महाकांतार के राजा व्याघ्रराज को हराया था।
[CG PSC (ASST. PROF. ENGG) 2016] [CG Vyapam (Mahila Supervisor) -2013]
2. रुद्रसेन :- चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती से विवाह किया।
3. प्रवरसेन :- इसके दरबार में महाकवि कालीदास आये थे। यात्रा के दौरान सरगुजा जिले के रायगढ़ की पहाड़ी पर मेघदूत ग्रंथ की रचना की और सरगुजा को स्वर्ण का द्वार कहा था। मेघदूत का छत्तीसगढ़ी भाषा में मुकुटधर पाण्डेय ने अनुवाद किया था।
4. नरेन्द्रसेन :- ऋद्धिपुर अभिलेख के अनुसार नलवंशी राजा भवदत्त वर्मन ने नरेन्द्रसेन को पराजित था।
5. पृथ्वीसेन :- केसरीवेड़ा अभिलेख के अनुसार नलवंशी राजा पृथ्वीसेन ने नलवंशी राजा अर्थपति भट्टारक को पराजित था।
6. हरिषेण :- जब वाकाटक वंश नष्ट होने के कगार में था तो बत्स गुलाम वंश आकर शासन किया।
विशेष :- इस वंश को गुप्तों ने समाप्त कर गुप्त वंश की नींव रखी।

6. गुप्तवंश (Gupta Period) (319 – 500 ई.पू.)

[CG PSC (ARTO) 2017]

- ♦ गुप्तकाल में मध्य छ.ग. को दक्षिणापथ कोसल एवं दण्डकारण्य महाकान्तर कहा जाता था।
- ♦ इसकी जानकारी – हरिषेण कृत प्रयागप्रशस्ति से
- ♦ गुप्तकालीन सिक्के – बानाबरद (दुर्ग), पिटईवल्ल (रायपुर)

समुद्रगुप्त – हरिषेणकृत प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार गुप्त वंशीय राजा समुद्र गुप्त ने दक्षिण विजय अभियान के दौरान द. कोसल के वाकाटक राजा महेन्द्र सेन को हराया था। [CG Vyapam (Mahila Supervisor)-2013] [CG PSC (Mains) 2006]

- ♦ महाकान्तर के नलवंशीय राजा व्याघ्रराज को हराया था। व्याघ्रराज को हराने के बाद व्याघ्रहंता की उपाधि धारण की।
- ♦ एक किंवदंती के अनुसार कहा जाता है कि समुद्रगुप्त ने दक्षिण विजय के दौरान महानदी के तट पर डेरा डाला था जिसके कारण महासमुंद नाम पड़ा।
- ♦ महासमुंद के कोपरा नामक ग्राम में समुद्रगुप्त की पत्नि रूपा देवी के साक्ष्य मिले हैं।
- ♦ समुद्रगुप्त ने द. कोसल एवं महाकान्तर को विजय के बाद अपने साम्राज्य में ग्रहण-मोक्ष नीति के तहत सम्मिलित नहीं किया।

[CG PSC (ARTO) 2017]

रामगुप्त – रामगुप्त के सिक्का दुर्ग के बानाबरद से मिला

चन्द्रगुप्त द्वितीय – चन्द्रगुप्त द्वितीय की बेटी प्रभावती का विवाह वाकाटक वंश के राजा रुद्रसेन से हुआ था।

कुमारगुप्त – कुमारगुप्त का रत्नजड़ित मयूर सिक्का आरंग से मिला।

भानुगुप्त – भानुगुप्त के ऐरण अभिलेख (510 ई. पूर्व) में शरभवंशीय राजा शरभराज का वर्णन है।

गुप्तकालीन स्थल :-

1. तालागांव का विष्णुमंदिर, 2. चरमकेला (पुजारीपाली) के कंबूटीन मंदिर
- ♦ गुप्तकालीन मंदिर नागरशैली में होता है तथा लाल ईंट से बना होता है।

छ.ग. के क्षेत्रीय राजवंश

राजर्षितुल्य कुल्यवंश

- ♦ भीमसेन (द्वितीय) के आरंग अभिलेख से राजर्षितुल्य वंश के शासकों के बारे में जानकारी मिलती है। [CGPSC (Mains) 2011]
- ♦ प्रमुख शासक – सुरा, दयित, विभीषण, भीमसेन (प्रथम), दयित (द्वितीय), भीमसेन (द्वितीय)
- ♦ राजधानी – आरंग
- ♦ राजर्षितुल्य वंश ने 5 वी से 6 वीं शताब्दी तक शासन की और गुप्तवंशी अधीनता स्वीकार की।
- ♦ इस राज्य के प्राचीनकाल में सर्वप्रथम राजवंश था।

[CG Vyapam (RI) 2017]

पर्वतद्वारक वंश

क्षेत्र – देवमोग (गरियाबंद)
जानकारी – राजा तुष्टिकर के ताम्रपत्र से
इस वंश के शासक स्तंभेश्वरी देवी उपाशक थे।

शासक – 1. सोमन्नराज
2. तुष्टिकर

नल वंश (4-12वीं)

1. संस्थापक	- शिशुक
2. वास्तविक संस्थापक	- वराहराज
3. राजधानी	- (पुष्करी) भोपालपट्टनम / (कोरापुट) ओडिसा
4. क्षेत्र	- दंडकारण्य क्षेत्र
5. मुद्रा	- अडेंगा (Adenga) (केशकाल- कोण्डागांव)

[CGPSC (SEE) 2016]

1. शिशुक	नलवंश का संस्थापक
2. व्याघ्रराज	हरिषेण के प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार समुद्रगुप्त के दक्षिणापथ विजय अभियान के दौरान नलवंशीय राजा व्याघ्रराज को समुद्रगुप्त ने हराया था और व्याघ्रहंता कि उपाधी धारण किया।
3. वृषभराज	सत्ता का संचालन किया
4. वराहराज	नलवंश का वास्तविक संस्थापक तथा वराहराज की मुद्रा कोण्डागांव के एडेंगा गांव से मिला है। [CG Vyapam (AMIN) 2017]
5. भवदत्तवर्मन	भवदत्त के ऋद्धिपुर अभिलेख अनुसार भवदत्त वर्मन ने वाकाटक नरेश नरेन्द्रसेन को हराया था और उसकी राजधानी नंदीवर्धन तहस-नहस कर दिया था।
6. अर्थपति भट्टारक	केशरी बेड़ा अभिलेख के अनुसार वाकाटक नरेश पृथ्वीसेन ने अर्थपति भट्टारक को पराजित कर उसकी राजधानी को तहस-नहस कर दिया। [CGPSC (ARTO) 2017]
7. स्कन्द वर्मन	पुष्करी को पुनः बसाया
8. स्तम्भराज	
9. नंदराज	
10. पृथ्वीराज	भगवान शिव के विरूपाक्ष रूप के अनुयायी थे।
11. विरूपाक्ष	
12. विलासतुंग	राजिम अभिलेख (700-740) के दौरान लिखा गया था।
13. पृथ्वीव्याघ्र	
14. भीमसेन देव	
15. नरेन्द्र थबल	नल वंश का अंतिम शासक था।

- ♦ 7-8 वीं शताब्दी के दौरान विलासतुंग राजीम में राजीव लोचन मंदिर का निर्माण कराया [CGPSC (AMAF) 2016], [CGPSC (ACF) 2016]
- ♦ विलासतुंग विष्णु भगवान के उपासक थे।

प्रमुख नलवंशी ताम्रपत्र

ऋद्धिपुर ताम्रपत्र	- भवदत्त
केशरीबड़ा ताम्रपत्र	- अर्थपति
पंडियापाथर ताम्रपत्र	- भीमसेन द्वितीय
राजिम शिलालेख	- विलासतुंग
पोड़ागढ़ शिलालेख	- स्कंदवर्मन

[CGPSC (Mains) -2011]

[CGPSC (Mains) -2011]

नोट:- छ.ग. के प्राचीन इतिहास का स्रोत विलासतुंग के राजिम शिलालेख से मिलता है।
सोने के सिक्के चलवाने वाले राजा 1. वराहराज, 2. अर्थपति भट्टारक, 3. भवदत्त वर्मन

[CGPSC (Mains) -2011]

शरभपुरीय वंश (600 – 700 ई.)

काल	– 6वीं सदी
संस्थापक	– शरभराज
धर्म	– वैष्णव धर्म से संबंधित
राजधानी	– वर्तमान सारंगढ़/संबलपुर/ (शरभपुर)

[CG PSC (Mains)-2011], [CG PSC (AD. Agri. Fish.)-2013]

प्रमुख शासक

1. शरभराज – शरभपुरीय वंश के संस्थापक (जानकारी भानुगुप्त के एरण अभिलेख 510 ई. से)
2. प्रसन्नमात्र – इन्होंने निडिला नदी (लीलागर) के किनारे प्रसन्नपुर (मल्हार) नगर बसाया तथा गरुड़ चक्र संख युक्त सोने के सिक्के चलवाये। [CG PSC (ARTO) 2011]
3. प्रवरराज प्रथम – इसने राजधानी सिरपुर बनाया।
4. सुदेवराज – इसके सामंत का नाम इंद्रबल था।
5. प्रवरराज द्वितीय – सुदेवराज के सामंत इंद्रबल ने सुदेवराज के पुत्र प्रवरराज (द्वितीय) का हत्या कर इस क्षेत्र में पाण्डुवंश की नींव रखी।

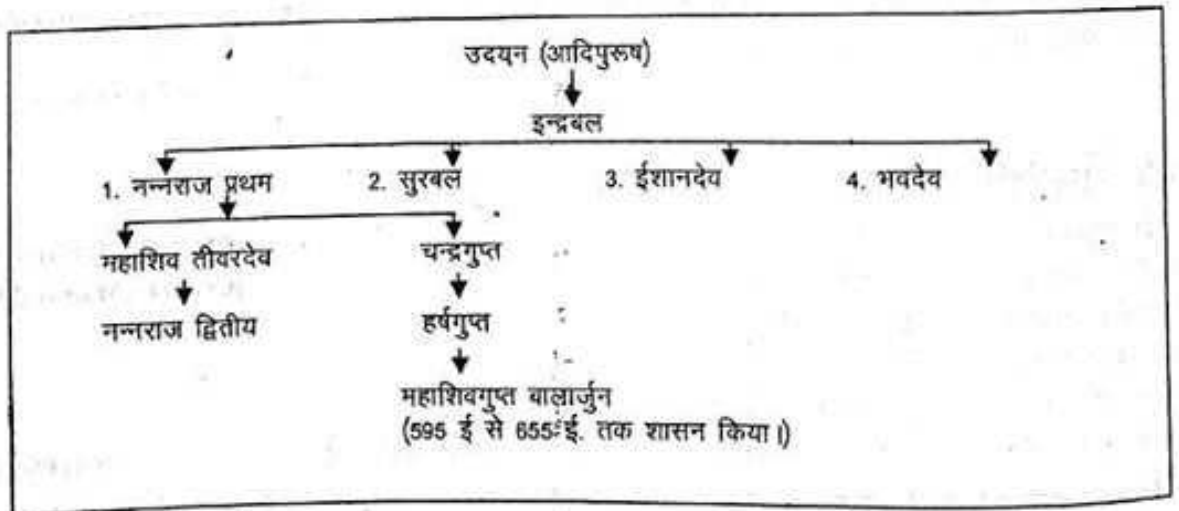
विशेष :-

- ♦ स्वर्ण सिक्के जारी करने वाले शरभपुरी शासक – प्रसन्नमात्र, शरभपुरीय ताम्रपत्रों पर जारी करने की तिथि स्थान एवं वर्ष लेखक का उत्कीर्णक मिलता है चित्र नहीं मिलता है। [CG PSC (Pre) 2014]
- ♦ भानुगुप्त के एरण अभिलेख (510 ई) में शरभपुरी शासकों का उल्लेख है। [CG PSC (Mains) 2011]

सिरपुर के सोमवंश/पाण्डुवंश (6वीं – 8वीं शताब्दी)

इंद्रबल ने शरभपुरी वंश को समाप्त कर छ.ग. में पाण्डुवंश की स्थापना की। छ.ग. में इस वंश की दो शाखाएं थी।

- पहली – मैकल श्रेणी में स्थित सोमवंश जो कि मुल शाखा थी
द्वितीय – दक्षिण कोसल के पाण्डुवंश शासन करते थे।



सिरपुर के पाण्डु वंश का प्रथम शासक उदयन था।

[CG Vyapam (E.Chemist)2016]

- आदिपुरुष - उदयन (उल्लेख - कालंजर शिलालेख)
संस्थापक - इंद्रबल
राजधानी - सिरपुर

प्रमुख शासक

- इंद्रबल - छ.ग. में पाण्डुवंश के संस्थापक।
तीवरदेव - इन्होंने सकलकोसलाधिपति की उपाधि धारण की। एवं पाण्डुवंश का विस्तार उड़ीसा तक किया।
[CG PSC (ARTO) 2017], [CG Vyapam (TC) 2010]
तीवरदेव वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
नन्सज द्वितीय - कोसल मण्डलाधिपति की उपाधि धारण की थी।
हर्षगुप्त - इनका विवाह मगध के मौर्य वंश के राजा सूर्यवर्मा की पुत्री रानी वसाटा से हुआ था।
♦ हर्षगुप्त की मृत्यु के पश्चात् रानी वसाटा ने महाशिवगुप्त बालार्जुन के काल में सिरपुर में एक प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर का निर्माण करवाया।
[CG PSC (SEE) 2016]
♦ यह लाल ईंटों से निर्मित गुप्तकालीन का श्रेष्ठ उदाहरण है।
♦ यह विष्णु भगवान का मंदिर है।

महाशिवगुप्त बालार्जुन - (595-655 ई.)

- ♦ महाशिवगुप्त बालार्जुन के शासन काल छ.ग. के इतिहास का स्वर्णकाल कहलाता है।
♦ पाण्डुवंशीय शासकों में सर्वाधिक समय तक शासनकाल महाशिवगुप्त का रहा।
♦ इनके शासन काल में प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेनसांग ने 639 ई. में सिरपुर एवं मल्हार की यात्रा की थी।
[CG Vyapam (Asst.Mang.)2015]
♦ बचपन में धनुष विद्या में निपुण होने के कारण बालार्जुन भी कहा जाता है। तथा इन्होंने परम महेश्वर की उपाधि धारण की। इनके समकालिक शासक हर्षवर्धन व पुलकेशियन द्वितीय (वातापी शासक) थे।
♦ ह्वेनसांग यात्रा का वर्णन अपनी पुस्तक सी-यू-की में किया जिसमें छ.ग. को किया-स-लो के नाम से वर्णित किया है।
♦ महाशिवगुप्त का शासनकाल धार्मिक सहिष्णुता से श्रेष्ठ था अतः सभी धर्मों ने स्वतंत्रता पूर्वक विकास किया।
♦ महाशिवगुप्त बालार्जुन शैव धर्म का अनुयायी था। किन्तु सिरपुर का पाण्डु वंश वैष्णव धर्म का अनुयायी था।
♦ महारानी वसाटा देवी द्वारा स्थापित सिरपुर की विष्णु मंदिर की प्रशस्ति रचना कवि ईशानदेव द्वारा रचित है।
♦ एहोल प्रशस्ति (पुलकेशियन द्वितीय) के अनुसार महाशिवगुप्त ने पुलकेशियन द्वितीय की अधिनता स्वीकार की थी।



मैकल का सोम वंश

- ♦ राजधानी - अमरकंटक
- ♦ शासक - जयबल, वत्सबल, नागबल, भरतबल, सुरबल
- ♦ शुरबल - मल्हार ताम्रपत्र अभिलेख से जानकारी मिलती है।

उड़ीसा का सोम वंश

[CGPSC (CMO, Paper-2) -2010]

- ♦ इस वंश के शासक त्रिकलिंगाधिपति की उपाधि धारण करते थे।
- ♦ कौसलेन्द्र की उपाधि धारण करते थे।
- ♦ संस्थापक - शिवगुप्त
- ♦ अन्तिम शासक - उद्योग केसरी

बाण वंश (900 ई.)

- ♦ काल - 9 वीं सदी
- ♦ संस्थापक - महामण्डलेश्वर मल्लदेव
- ♦ राजधानी - पाली

प्रमुख शासक

- ♦ विक्रमादित्य - इन्होंने 9वीं सदी में पाली के शिव मंदिर का निर्माण कराया। जिसका जीर्णोद्धार कल्चुरी शासक जाजत्यदेव (प्रथम) ने कराया।

विशेष :- त्रिपुरी के कल्चुरी शासक शंकरगढ़ द्वितीय ने विक्रमादित्य को पराजित कर इस वंश को समाप्त कर दिया।

उपाधि	शासक
1. त्रिकलिंगधिपति	सोमवंशीय शासक (उडीसा के)
2. सकलकोसलाधिपति	लीवरदेव (पाण्डूवंश), पृथ्वीदेव प्रथम (कल्युरीवंश)
3. भोगवतीपुरेश्वर	छिंदकनागवंशीय शासक
4. परममहेश्वर	महाशिवगुप्त (पाण्डूवंश), कलिगराज (कल्युरीवंश)
5. सेंट ऑफ जेरुसलम	रुद्र प्रतापदेव (काकतीय वंश)
6. परमभागवत	पाण्डुवंशीय शासक

मंदिर	शासक	जीर्णोद्धार
1. लक्ष्मण मंदिर (सिरपुर)	रानी वसाटा (पाण्डुवंश)	जगपालदेव (कल्युरीकाल में) जाज्जवत्यदेव (कल्युरीवंश)
2. भोरमदेव मंदिर (कवर्धा)	गोपालदेव (फणिनागवंश)	
3. महामाया मंदिर (रतनपुर)	रत्नदेव प्रथम (कल्युरी वंश)	
4. राजीवलोचन मंदिर (राजिम)	विलासतुंग (नलवंश)	
5. शिव मंदिर (पाली)	विक्रमादित्य (बाणवंश)	
6. शिव मंदिर (बारसुर)	धारावर्ष (छिंदकनागवंश)	
7. विष्णु मंदिर (खल्लारी)	देवपाल मोची (कल्युरी काल)	

क्र.	काल	मुद्रा
1.	मौर्य काल	अकलतरा, ठठारी (जांजगीर-चांपा) बिलासपुर बारगांव (रायगढ़) तारापुर, उड़ेला (रायपुर)-आहत मुद्राएँ
2.	सातवाहन वंश	मल्हार (बिलासपुर) चकरबेड़ा (बिलासपुर) बालपुर (जांजगीर), मल्हार (बिलासपुर)-अपीलक मुद्रा चकरबेड़ा (बिलासपुर)-सोमकालीन मुद्राएँ
3.	कुषाण काल	बिलासपुर तेलीकोट (रायगढ़)
4.	गुप्तकाल	बानावरद (दुर्ग) पिटरईवल्ल (रायपुर) आरंग (मयूर सिक्का)
5.	नल वंश	अडेंगा (केशकाल-कोण्डागांव)

मध्यकालीन छत्तीसगढ़ का इतिहास (Medieval History)

इस काल के दौरान निम्न राजवंशों का शासनकाल था।

- | | |
|--|-----------|
| 1. कल्चुरीयों का शासन काल (Kalturi Dynasty) | - रतनपुर |
| 2. फणिनागवंशीयों का शासन काल (Faninag Vansh) | - कवर्धा |
| 3. सोमवंशीय (Som Dynasty) | - कांकेर |
| 4. छिंदकनाग वंश (Chhindak Nag Dynasty) | - चक्रकोट |
| 5. काकतीय वंश (Kaktiya Dynasty) | - बस्तर |

